

मन की दिनचर्या

3.00 - 4.00 - बाबा से रुहरिहान.....।

4.00 - 5.00 - भिन्न-भिन्न स्वमानों व स्थितियों का अभ्यास.....।

5.00 - 6.00 - मैं इष्ट देव अपने देह रूपी मंदिर में विराजमान हूँ.....- बाबा की करेन्ट मेरे ऊपर आ रही है।

6.00 - 7.00 - पाँच स्वरूपों का अभ्यास..... - बाबा की किरणों के नीचे रहना...।

7.00 - 8.00 - मैं गॉडली स्टूडेंट हूँ। - मैं आत्मा इस देह में बैठकर परमात्मा के महावाक्य सुन रही हूँ।

8.00 - 9.00 - मैं बाप समान हूँ। - स्वयं से बातें करना/चिंतन करना।

9.00 - 10.00 - सर्वशक्तिवान बाबा मेरे साथ हैं...मैं उनकी छत्रछाया के नीचे हूँ।

10.00 - 11.00 - अनेक बार अशरीरीपन का अभ्यास..मैं आत्मा इस देह में आयी हूँ।

11.00 - 12.00 - आत्मिक दृष्टि का अभ्यास...सभी आत्माओं को आत्मिक दृष्टि से देखते हुए सकाश

12.00 - 2.00 - भगवान मेरे पालनहार हैं..वे मुझे खिलाते हैं..अपनी गोद में सुलाते हैं..वाह रे मैं।

4.00 - 5.00 - मैं इस देह में अवतरित फरिश्ता हूँ... लाइट हाऊस हूँ...।

5.00 - 6.00 - मैं बाबा को देख रहा हूँ और बाबा मुझे देख रहे हैं...मैं बाबा से करेन्ट खींच रहा हूँ।

6.00 - 7.00 - परमधाम की स्थिति में, स्थित हो बाबा से सर्वशक्तियों की किरणें लेकर सारे संसार को देना।

7.-00 - 8.00 - अपने फरिश्ते स्वरूप के द्वारा सारे संसार को सकाश देना।

8.00 - 9.00 - मैं विष्णु चतुर्भुज हूँ...श्री विष्णु चलते हुए आते हैं और मुझमें समा जाते हैं।

9.00 - 10.00 - बाबा के रंग-बिरंगे फाउन्टेन के नीचे रहना और विश्राम करना.....।